

विनभेमहर्षिण्डे ॥ सुभितिवमभसुषुड्डपमउवधुये ॥ पूरुमः सुेडि
महर्षे भिमरिमडाकगिभा ॥ उड्डवमः सुनेरगवड्डुड्डवतुपिकगभि

वसुड्डपि कउम **विनभेविप्रदने ॥** विनभेनभिमदय ॥ विप्र
भुवयनः ॥ वक्रमयउडि पाड्डिः ॥ ० ॥

कमउवम ॥ विप्रमयः भुरग ॥
सुनिनः

भुनयेषमिदुः ॥ भडैकडानभउयेव
महर्षे कभिं सुने विमुने

यसु मं मडिडे ॥ ० ॥ वंदिं
सभंप्रवदेः ॥ नरपिउंप्रमगुले व

ध.
मु.
०

नमस्तः

उद्देउभाद

पुनपिपयः॥ किंतेधुमदतिममेदति

भकुले

सुभा

पुमा
नरुवह निमिउवन

सवंरुगिउधले

मुष्टयेगुताम

सह॥ येगुताम

भुवयति॥ भह

उडिअहमा॥ १॥

नगुरतेः॥ ०॥ भट्टेपनठिराननुपउपः

पडिअहं

उमिय
अपुहं क
नति॥

उमः

सूतेरा॥ भुराः पूठवरलपेनधवा

सधुनयेगः॥

लउपन
अयेपि सुम
सगुः॥ यउः

७
पुतापः

कुियेगः॥ नगपनयदिठवतिपरभु

एवं कृत्वा केवल यदनेभ्यः मभूवती इति उक्तं मनीषिणा नः वृत्तिरिति उक्तं
देवगिरिदा॥ विप्रमिति॥ एतन्मम महेम ममभुपस्यः प्रमदं हीभुतिः न

अथा॥ यस्तु

केवलया॥

मनेम यतिः

मनेम यतिः

मूतंमा वृत्ति

पुमः॥ कृत्वा उक्तेषु कृत्वा वृत्तिरायुष्य

वृत्तिरायुष्य
कृत्वा उक्तेषु कृत्वा वृत्तिरायुष्य

य॥॥ विप्रमिति॥ यत्तु मरवि

मउत्तिमने

विप्रमिति

न॥॥ पमरवि विभाष्य सुपसंवरिधु॥

नउत्तुय

मउत्तुय

पु॥॥

॥॥॥

पु॥॥

९

महेतुमयितमने वसनेदितु॥॥॥

ऊपिउदभविस्तुभिउरु॥विभुलिउे

विप्रभुः दिगच्छाष्टः

यममव ०

नलालिउःभउउेनिरभुः॥०॥उभम

भभुनरुउभदभमिधेरु॥सुयःसिधे

विठवभैद्वियभविरिगुज॥नेमुभिउे

ब्रह्मल्लेगभठिष्ट
पुलिभमीनपि॥

पञ्चिङ्गः ५

विलालिङ्गचक्रविग्रहे ॥ कलङ्गे

किंमवतुमान
कलेधि न ठेग
दंडेन कुरति
पृष्ठुडमु ॥
वमंडचेपि ॥

पनयमं निराहृष्टपञ्चमा ॥ ७ ॥ ऊरु
मिधः सुतिभापभगाहृष्टिउप ॥ के
सगीरः रेगलं उरुव अंनं

५. संकलेवरभमेधनसंविरेदः ॥ निविष्ट
६. एतः ॥ किंनविग्रहडे उहृद ॥ निचि
७. मुडे उडि उषम ॥ कभायिमभनवृग
८. निचि रेपुव कसे नमीह ॥ यमुः मित्र भमं दूमय
९. मस्त्रिउमि डिठवः ॥ ७ ॥

यमुधि

भयउल्लैः भूपलवैः

यमुपीडिविद्व॥ कृभनलंभपुलवैः स
मुः भष्टेः ३॥ मवपु ३॥ वेए ३॥ यमुमः ३॥ दे

भयचुरपैः ॥०३॥ कृदंरएः पूठवरं
मुभुरजाले

सउभोषिकेभिः ३॥ ३॥ भुरेउरजाले ३॥ ३॥

वउकभ ॥ नवृक ॥ नउठवमुनवैर

उद्विहंक वनिचि ॥ मि ॥ मनदेपिभयिपुव
उयद्वृपयेवेष्टमयेनः ३॥ कृदुभिडि ॥०॥

नमः द्यूरी मभति॥ मित्रुभिष्टुद॥ नैभेति॥ एतेवृक्षः॥ यः॥ परः॥ उतुमाः॥
 मयभभुगे॥ नीमडहेवृक्षपापरः॥ वरभतिः॥ ॥॥ उद्धिमचभभुमाः॥
 एकत्रपम्॥ किंनभुडशुद॥ ॥॥

भय॥ यनेदिउः॥ मिरभिपंरुकरः॥ पु
^{निमुयेन} ^{पमं वडकलभुत्रपदरः}

भामः॥ ०७॥ नेधपरावरभतिठवतेन
^{पूतउभु} ^{मृदुतः}

नभु॥ पूतेदषड्भुहमेरागउभुष

५. पि॥ भंभेवयभुउरेरिवतेपुभामः॥ मे
 ३ ४ ९

उषपीति॥ वैधभुः॥ ठवेम्भुत्रः॥ यषभुउरुः॥ मेवकभेव
 ०० भड्डल्दः॥ नभारे॥ ठलेमभति॥ नमविधभभुमुडा॥ ॥ १० ॥॥

एवं कुतः भनमिभति॥

भउरं दृष्टमेकठयेध ७३३॥ उभिक्कषं
शुक्रियं॥

उवगतिं विभुसमिमीनः ॥ ३३ ॥ एके
घडेभपुग मेः भती
मिरभः

कउसूउविकदुतिमविशुप ॥ मिसेवृ

उभुगुमरं सुव ॥ कुतः श्रिता ॥ ५५ ॥

५.
५.
००

कले उत्रकगेभि यउमुरुं कत्रेठवः यउभिधुधि।
यगेभुः विठवज माएवं म्रउभुः श्रियगडति प्रभिसुः ॥ ३०

भरुप्ररुधपभियुगात्रुवउं॥ कत्रः

कले यमठवभि यगेभमडुमा ॥ ३० ॥

नैउमनभुवकषाभुविउठनषभं

प्रीयउमुरितुमुभमपुतीवभा ॥ क

उमेवंठगवउमुं निउपुमुमुम उदिमारेये
गुं निवेमयचूऊयउ नैउमिउिशिठिः ३३ ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
भक्त वैराग्यी भक्तुदपलव ॥

कथं दे

एकेनमया
भक्तिरात्रः
कथं वाग्यी
यउतिमेतद्
न केचिदि ॥

भुपगविगुदवैरभैइं ॥ ननुतिपरम

पीपदिभुम्भम्भ ॥ ३॥ केचुइतेपिल

नकेपि मरुम
चलने
इतले ॥

गुरेठगावचुयम ॥ उडागलेमुठव

कुतः विमुम्भ

सुत्रगुद

भदतं

भम्भुवलेपदेतेः ॥ भुम्भुवेभदमः

विमुम्भेइतिभुतिमंद
रां देतेः किभेउम्भु
रभितिठवः ॥ ३५ ॥

उमिउंमउमिहृद्
॥ भुम्भुविडि ॥ ॥

पु.
०१

नकेवलभद्रमेकपदैवंकभूंममभःपत्रः॥ किनुभद्र
एनेधुवमेवल्लिसृति॥ सुउभचंएनेपालयति॥ पू
ऊय उ॥ एय भिति॥ ॥ ३३ ॥

वृत्तसुपलरु/क्वामकममति॥ वृत्त

भूपतुडवगेदपडिल्लनति॥ ३३ ॥ एवं

भुकमपडिउंठववेउरष्ट॥ भृष्टेष्ट
कि

मभर॥ मनठीउठीउभा॥ पसुलूनं

भनुं

रुमाङ्गु निउउं भुवदिचिमितु ॥ नवि
युक्तं मे उता

रुमङ्गु सउभपु निभङ्गु भाने ॥ रुते
क ३ ॥ वृक्तं

रेकषभदेपलठेउवीरं ॥ ११ ॥ भङ्गु

येनिरतिविभिउ सुभिउेङ्गु ॥ कलेनगीव

ठवङ्गु पाभनय ३ सुभिनेव ॥ सुधुवविदु ॥ भद्विउि ॥
भङ्गु ३ ॥ पाभनय मञ्जनभुक्तभा ॥ १३ ॥

ॐः
उपमपरिसुदुठवः॥ इमभूनीमकुवि

गत्रुभिवतिभुं॥ मुतेमियमयभये।

विउउंरुमज्ञ॥ १३॥ एवंभदभूवमनडि
मुनेनध करे सुपरिभ

५. मिरःकरे॥ नभभृकलनयन ॥
०२

रंसुगडेनमरुभूतउडेठवमिदु॥ एवभिडि॥
भउधपादेनेपलाकिउः॥ मात्रिवैमःपममिरमन
यभुउमा॥ १७॥

मायापूजने

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ मायाभयं भद्रपल

किं उभयत्रिवेसं ॥ १॥ शुभदप्रदमभाप

भुवं विगिद्धिः ॥ १॥ ३॥ उभेठवद्वयमिर

भुवं समविष्ट ॥ १॥ सुमद्वद्वतिचलेभप

उममठवं भुभुत्रुगुदं द
वना ॥ १॥ उममिद्धिः ॥

एकमुमेवेष्टमिठिः श्लोकैः ॥ यमुक्तं ॥ पञ्चपातेन ॥ गङ्गा ॥ उमु
पञ्चवपुः ॥ महेष्टपणिके ॥ नउमुतेऽति ॥ उमुपुमंदगति ॥ उक्तं
॥ उति ॥ उ० ॥

कैटकाष्टे ॥ ददुनयसूतिगं मु

एमुभसु ॥ महेष्टवपुयउमं उत्रमभं

नति ॥ उ० ॥ उक्तं ॥ उतिगधिमेवगधं

पलयमि ॥

वउगै ॥ लैकविठवयमिदंभिरगदु
॥ जीपना ॥ एमं

५.
०५

मृच्छ, मुमुभिन्नत्रुगउमपिहंनरुनतीहृद ॥ नैउडडि ॥ मरुमृष्टपनमि
वृष्टगडा उधरभाति ॥ इमेवमभापिनेपा मउडडरुः ॥ उषाममूडिः ॥ कि
मंरु वयम वृष्टम दे कि मंरु वयं य कृम दे ॥ ५३ ॥ नउ वृष्टे मृष्ट

नैउगु ॥ नगुमिनेमदममयेये ॥ ५५ ॥ मरुमृष्टमेवि
धकमिउभा ॥ लापनंदिउमि

मवेभनः प्रहृउयः मदमेवमहः ॥ ५६ ॥ मरुमृष्टमेवि
मरुमे प्रहृउयः ॥ यमउमेदकलि
लंउमिहृडिउमि

मृष्टत्रवउउमगायविमत्रिदिह ॥ ५७ ॥ मरुमृष्टमेवि
मंमरं मृष्टमृष्टे निमप ॥ ५८ ॥ मरुमृष्टमेवि
मिनिचेमंमृष्ट

मेवंविममृष्टपियेविममत्रिमरुमृष्ट ॥ ५९ ॥ मरुमृष्टमेवि
मृष्टमृष्टमेवि ॥ ६० ॥ मरुमृष्टमेवि

उपमंदरति उमिति मचकमःपुनि

उदेदुभनमःमुतिकमप्रर॥कम

परिमद

मृडिसुरयेःमृवकषयभा॥

मंमेवयदुयिविनेतिधदुयकिं॥

ठजिंरानःपरमदंमगतेलठेउ॥२३॥

५.
मु.
१०

उ३म पद्ममीनं मुत्करं

वचउपभुमयेनपरवरहभा॥१०॥प

पुत्रद्वन्द्वदपय॥पुत्रभि३इद्वन्द्वपुत्रमेव॥मनयेद्वसयेन॥द॥एवभि३॥

वैरानेनिषडिउं पुंठवदिऊपे॥कभ३

पुंठवाएदि
यऊः॥ऊप
भुभि३॥

मदं
ठिकभभत्रयः॥पुपउचूमङ्ग॥दह३

नगमेन दे
इमपुत्रदि॥उरगावज्ञदीउः॥भेदंकषे

नमः शिवाय नमः शिवाय नमः शिवाय
नमः शिवाय नमः शिवाय नमः शिवाय ॥ ११ ॥

नमः शिवाय नमः शिवाय नमः शिवाय ॥ १० ॥ नमः शिवाय
नमः शिवाय नमः शिवाय नमः शिवाय

नमः शिवाय नमः शिवाय नमः शिवाय ॥ नमः शिवाय
नमः शिवाय नमः शिवाय नमः शिवाय

नमः शिवाय नमः शिवाय नमः शिवाय ॥ नमः शिवाय
नमः शिवाय नमः शिवाय नमः शिवाय

५०

नमः शिवाय नमः शिवाय नमः शिवाय ॥ नमः शिवाय
नमः शिवाय नमः शिवाय नमः शिवाय

नमः शिवाय नमः शिवाय नमः शिवाय ॥ नमः शिवाय
नमः शिवाय नमः शिवाय नमः शिवाय ॥ ११ ॥

नमो भगवते नमः ॥ मंत्रं नमः ॥ इति मन्त्रं विकं किन्तु भाय
गुणं पणिकं ॥ मन्त्रं केव यिमुत्तमं येगाज ॥ इति ॥ एक उति ॥

कंदरभि ॥ ११ ॥ एकमु मेव रागमे उम

भृष्टयदु ॥ भृष्टयेः पृष्ठगवभृभिभ
गुणं पणिकं ॥

पृष्ठयदु ॥ भृष्टयदु ॥ इति करं निराभाय

गुणं पणिकं ॥ नमः ॥ इति ॥

येमं ॥ ननेवते रवभिउमुमत्तपुविधुः ॥ ११ ॥

उमुत्तं ॥ भृष्टयदु मे निजु ॥ पिष्टयदु ॥ इति ॥ रागवभृष्टयदुः परः ॥ भृष्टयदु
यागु ॥ भृष्टयदु ॥ इति ॥ मन्त्रं ३३ ॥ करं ॥ इति ॥
वपिष्टयदु ॥ भृष्टयदु ॥ इति ॥ मन्त्रं ३३ ॥ करं ॥ इति ॥

ननु यत्ने उल्लगमद्भुत उद्दिष्टगते वैधमूनमभाधि वैधमूं किं नभृ
मिह उच्यते ॥ इव ॥ ३ ॥

मभिः ॥ रागजः

कदक ॥ ४ ॥

मुमुतेयेः ॥ ५ ॥

ॐ

इव ॥ ६ ॥ मम ममी मठ वं भुते ॥ मय

मुद्गीयेयं परे
यमिडि यव
मिः ॥

यम ॥ ७ ॥ पय वदिरियं हृप ॥ यम ॥ ८ ॥

कदक ॥ ९ ॥ मम ममी मठ वं भुते ॥ मय

ननिपने भुतिरीत् ॥ १० ॥ उच्यते मेव वभ

उच्यते मेव वभ ॥ ११ ॥

५. कलवमभिउचेः ॥ १२ ॥ नृभुममभुनिरा

०१ मयभुः कलमचे न नील ह्म ॥ १३ ॥ येग ॥ १४ ॥
भुमये न वभु उच्यते ॥ १५ ॥ उच्यते मेव वभ ॥ १६ ॥
यव ॥ १७ ॥ मम ममी मठ वं भुते ॥ मय ॥ १८ ॥
मभिः ॥ १९ ॥ रागजः ॥ २० ॥
कदक ॥ २१ ॥ मुमुतेयेः ॥ २२ ॥
ॐ ॥ २३ ॥

उद्दि किं रीव भुवममपिउभवत् उडुप
निम्भु नदियेगावउ। वदिच/डुठव
भभु विमेमुते॥ ८४८॥ येनेनेडि॥ १५॥

१०
निरभाप
भवः उठव
नी॥

हिलयभुमष्टे॥ मेधेडुभानिरभाप

यउः सुवभुइये
उडिउ॥

उठवेनिरीदः॥ येगेनभीलिउरुग

भभुउडुव विभुयना

डुनिपीउनिम्भुदेभुतेनउउभेनगु

नपसृभि

रगउभुये विव॥

रगउ

सुयडे॥ ३५॥ उभेवडेवपरिमंनिरक

उमनीकगलेनमवधिप/षगवभुने
मसयमष्टउमडुभवेडेउडुपाडुयडि॥

उभेवेडि। मउ डि॥ १०॥

सुम्नि दुयेव गुम्भ भडा दे

उभिन्नं कुरु भवेय भूमः॥

शुक्र शुद्धग

उप
सुनक
सुभा
आ

पुंजी

CC-0. Manuscript from A. Razdan Sahib's Collection. Digitized by eGangotri

हं म ह्मी यं म्म उ ग यि धु मि ॥ ५ मं द्र गू दं
भा द या ॥ ५ ति ॥ मं उ द र ॥ कि त्ते न ॥ ५ ॥

दे उ उ र ल न ॥ ठ क न ॥
न गू द म्म उ च त्ते ॥ कि त्ते न ॥ ५ ॥ धि य र न न

सु म्म कं ५ ॥ नै वे द्दि र ॥ प र द्द र ॥ ५ ॥ द्य वै

उ र ॥ ५ ॥ म्म द्दी र ग य न भ द म्म उ म ग्म मि
सु दं

उः ॥ मि मे उ ते वि भ्रा प मे उ म ५ द्दि य ५

व द्म प ल म हं उ व द्म ग यि धु मि ॥ उ व उ व द्म उ ५ः ५ः कि म्ने न
नि वृ त्ते ने उ उ म्म द नै वे ति ॥ ह्म द्दी र ग य न भे व ॥ भ द म्म उ ॥ उ म्म न ग्म
मि उ य ५ ५ म्म दं ५ मि य ५ म्म य ५ मि उ ५ म्म य ५ म्म य ५ म्म य ५ ॥ ५ ॥

हंतावन्मुक्तिं गच्छन्तं मुकुन्दमुनय उभये वृत्ति
मेव हंता ॥ ॥ प्रयेत्येति ॥ ॥ ३१ ॥

उपमि हंता

मयाभाषयन्तु भुवने विभुः

दे

न ॥ ३ ॥ प्रयेत्येव भुनयः भुवि भुक्ति

कम ॥ भिने सगति विरनेन परक ॥

भुक्तिने मुक्ति ॥

निभुः ॥ नैता विदयदप ॥ विभु

५.
मु.
०३

उद्धृत्कमपि पूजयममवकिमिति ॥ निरुप
भीति ॥ मेरु ॥ मुद ॥ नृभिति ॥ ३१ ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

दिउमुं॥ ककु यनेन करये गिवं दुःपदः
रगडी

॥ यथा ॥ इष्टुतिनेदत्तप ॥ वरुणः पठ

विभदेउनम
चे मरुपिक
कुडिवमिडि
मधुतः
३३ ॥

राः॥ कङ्कुतिवक्त्रनभिरंविधदेउणी

२:॥३॥मिनद्रुत्सूततेपेष्टयनभुपम।ष्ट
विविक्त वमः सुपवजदेतवः

पृष्ठद्वयमभ्युपवृत्तः ॥ ५ ॥
श्रीवनेपायः

५. परंपरुषोत्तमिउत्तियं ॥ वसुधवसुध

ननुभो नमिदिमैक्रमापनैः सुलठैव उधम, पि भुजिमुदु,
मेनेति। सुभिक नं वतु सुपिठ वतिवनव, सुभुष्ट, नियत
रुलदुत॥३७॥

इष्टुनंत ठजिं विनमक मैमै न

मि ठिन्नठवरेवेष्टुनंतपडति॥ उपलक्षुते॥

नवइउमभिकनभा॥३७॥उपेउमेम

कदक

प्रकमि

विवमपे

ममतीउवेवेमम/धु॥वीरुगविवन

ऊःप

ऊःप

ममुतेम

मुतेऊऊएव

पूःऊ

मत्रमउपकभु॥यऊःममऊमुठयइ

विमिचुतेडुं॥येगेनवकिभिवमरुधन

सुनभिउमेधः

वृत्तः भृत्ता ॥ २ ॥ वृत्तः भृत्ता ॥ २ ॥ वृत्तः भृत्ता ॥ २ ॥

भृत्ता ॥ २ ॥ भृत्ता ॥ २ ॥ भृत्ता ॥ २ ॥

गुरुत्वा ॥ भृत्ता ॥ २ ॥ भृत्ता ॥ २ ॥ भृत्ता ॥ २ ॥

भृत्ता ॥ २ ॥ भृत्ता ॥ २ ॥ भृत्ता ॥ २ ॥

पु.
सु.
३.

ॐ ति मीठ गवते मपुमभूते पूरु ममुतिः मं प्र
लं॥ ति गे के रि म नं गू द ने ध क मे॥ प्र
य ग ग गे म क क ल्प व म॥ य म्मु धि
उं मे रु म्मु व ल म नं॥ गे वि क्न न म म्भ र
न न उ ल्म॥ ॥ मु ठ म्मु म च र ग ड म॥ ॥

... ..
... ..
... ..
... ..
... ..
... ..
... ..

उदि किं पनमुनेन भक्तनं प्रकृतवठगावनपेकते नेष्टन नेवेति ॥
उदि किं प्ररं नेकुरेव उरुन कन उति। यतः कन, उ कनीताव। उरुनेतु
वतिष्ठुदुदेतः ॥ सुपमः ॥ भान यमुमिति ॥ भापे

पुनं पुनतिमज्जलेन उरुविभनः ॥ १ ॥ दउवडिलक
मिमीः प्रडिति

५ मृते १ १ ० यतः प्ररं, भुभापभु यषा
नैव पुनः पुकुरयेनिरालठपुले ॥ भ कवडि नउ
भाकउमेव

नंरानमविमुधः कन वलीडे ॥ य कपलः ५ कउमकउउमु
ग्री ५ ॥

मुनेठगवडेविमपीउभने ॥ उमुमु

ठवडि

यम्भमेवंठगवठकुव उधुडि
उम्भमदं। नीमेपि रंसुरमुउम
दिभनंगुमि ॥५॥

नेधुडिभापभृयषभापम्रीः॥उम्भमं५

विगउमङ्कः
मना

देविगउविल्लवरंसुरभृ॥भवभृम

मदिभनं

मुभनीध नुमरे ५ ३ भायय

दिगुमिभयषभनीधभा॥नीमेरु

संभरं

५ मदिभृ

यगुमिभनभनधुविधुः॥प्रयेउयेन

मुरनउपिमुडिकरुदेउभाद
प्रयेउउडि ५ मृमृउषमेपक
मुठवडा ॥५॥

३ दिपुभा

५.
मु.
३

उरुवंठगवडुडावडुनेननपिकरंपरिहृष्टे उम
नीउंमुवकेपेपमंदरे पूऊयउ मचेउडिमुहभा॥

नत्रवल्लिडेन॥५॥मचेहुभीविपिकरमु

वमडुपाभे॥वृऊमयेवयभिवेमनमे॥
किनुमुसुये व॥

द्विरात्रः॥केमयडुउयउउउमुआपयम॥

विमुष्ट विविपं क्रीडनं॥

मु॥वित्रीडिउंठगवडेरुमिरवउरेः॥१॥

वसिष्ठः परेभ्यः वरिष्ठैः उवाच ॥ इत्युक्तं तत्रैव दृष्टव्यं तत्रैव श्रुतं तत्रैव
 भित्तिः अपरिधि मेमेतेव उद्धि वक्रुनं भापः वक्रुममुं के प नह रभी
 डि मेउरुद ॥
 लेकमुति ॥ उमरुं दृष्टुं ज उधमं द्र ॥

उद्धि रान उद्धुमुभदुभमुगमुदउमुयदु ॥ मेमेउ
 नं धनरुयः
 उव यमने पा यमी डि मेउरुः दाऊ प्रभिति ॥
 सउरुपम अपरिधि वसिष्ठमयदह ॥ लेकमु

गमुमेवठय भापः ॥
 निवउमेउरु ॥
 पारले नह
 उममुति डि
 ठवः ॥ १ ॥
 निव डिभिउः प्रुडियनिमचे ॥ कुपंन ॥
 ठेः ठयनिव ॥

५. मिंदविठययएनः भुरति ॥ १ ॥ नदंवि
 ६. यमकुमंयंभ
 ७. उमसः भुरः
 ८. मापुनं उमकुं
 ९. दः ॥ नह उधं
 १०. वेनमपः किंमे
 ११. उउरु ॥
 १२. ॥ ठमुगिउ

वंममिठेधिउद्धि रभी
 डि मेउरुद नुदभिति ॥ ३ ॥

अदमममने३

कृष्ण कृष्ण

एवमुक्तामपि तत्रुपासुनविठभि॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

विठ्ठिवापगुडा॥३॥इमुमुददप॥८॥

सुभ्रं यदुगं संभारमके कसनं दुःपं
उभ्रं उहपि दिभ्रं भव ॥७॥

इलदुभ्रं देग ॥ संभारमक कसनं दुःपं

निमि युभिं ॥ मना

दकम नीय उभ

भउं पुं नीउः ॥ वदुः सुकदु ठिकु मउ

पुडि मना

सुपवजकु उं मरं

भउं दुः मुलं ॥ श्रीउं पवजभरं ॥ द्रुयभ

मभ्रं सुभि ॥

कसन ॥७॥ यभ्रं द्रुय ध्रिय विरोग संये

॥ गरु ॥

रुभ्रं मउि मद्रुी डिगि डि मेउदि नना
येनि धुलि सु भानं भ्रम भ्रम सुहुन

रुवदुमव उदु पमि मेउि भ्रुयउ ॥ यभ्रं मिउि ॥००॥

उद्दिष्टः अपभ्रंशकः कटुति मेड्डु। सुःपेधपभिडि॥००॥

अभि

मेकपिनभकलयेनिधमहभनः॥सुः

द्वेष्टः ५८ भं न

द

पेधसंतपिदुःपमउद्विदां॥कुभ

स

स

निमुगेपायं

द्वेष्टः भन

कुभभिवमभेउवमभुयेगभा॥००॥मे

५

दंष्ट्रियभुभहमः परमेवउय॥लील

नवमभुयेगेनधकडुमपि। उमनुगयकुडनं। प्रवेजननमः। पनंजुडः।
परिदगमुड्डु। मेदुभिडि। सभुधकडुभुठगवमनुगदे॥ मड्डुभुडे वीउ
रगउयठगवमु॥ उनुवलन॥ उड्डुमुः। पनठिठवः। भुमिडि। ॥ वड्डुः॥

कि
उमुय
कः उषम
षचमीमुडि
मेवः दवैध
पडिभद्व
डि॥

कषभुवनमिंदविरिद्धिगीः॥मृदु

मिउमुत्रगन्नुविप्रभुके॥

ॐ उपमस्य गालयदं भभङ्गः ॥००॥ च

५. लभुनेदसरं पिउरेनुमिंद ॥ नउभुम

मु. ननुःपेमुपुमुउरुगीकरेलेके। प्रभिसुपव। किंभमःप्रभिनः।
उरुद॥ चालमुडि॥॥ चालमुपिउरे। सर॥ नठवतः॥ उरुपल्ल
भानमुपि॥ उमुदः। पममनग। कुमिमःरुगीगतामिधु॥ उरुमेव
उरुपममनमु॥॥ नमउरुगि। उरुममेः॥ सर॥ उरुप
CC-0 Manuscripts from A.K. Razdan Sam's Collection. Digitized by eGangotri

नपिउमत्रुतिमभुमेभल्लुतेनरभुनेःसरलं उयनेकयेव भद्रमल्ल
 नमज्जनजो मउभु भेव। सरलं भिहृजः ॥ ०७ ॥
 लपधपं भभुमे भुमः सुःपैः

गमभुमत्रुतिमभुमेनेः॥ उपुभुउडुति
 उभंभुःप
 नं भुती करः॥ मभुतिवि पिः॥

विपिटउदालुभेषु॥ भुवद्विठेउवहृउं
 उवमेवनइ उतिकः इय मपिकर निभितुज
 १॥५
 कल

इमुंभेमिउनभा॥ ०७ ॥ यभिमृतेयदिये
 करलेन भभुवि॥ मपमनजो भंभुम कम मचमीनः भिहृमि॥

नमयभुयभ॥ हृमेयषयमुउयभुप

ननकुमिडेनमिडुउमिडुममिडुमिडुमकेपिम। मृतावेहमह उरुपि
 उउमू पे॥ इमेवगमकउहृगीतहउमेव भचइउभइ॥ यभिमिडि ०३

卷四

वेमेऊक
प्रपणन॥

यमेवकुं मंभगमरुद्रकं भनभुज केडिउरे
रुमरुः दूतः पयकिउः इमरुनविदुः ॥०२॥

^{सुविदुय}
कन्नेभयेयमरुययिउधेयमारे॥मंभ

^{ठे:}
रमरुभरुकेडिउरेरुमरुः॥०२॥मरुदि

^{वृद्धि} ^{भायपूरकः}
निदुविणिउरुगुः॥भुणभु॥कलेव

^{यउः} ^{कद} ^{भापन} ^१ ^{मं ३}
मीदउविभरुविभनमजिः॥मरेवि

ननभभःपिभयमभुनरुद्रुद्रुविमेधाम्
दूतः केविमेधउरुमुद्र मरुभिदि ॥०५॥

